St Claret College LIBRARY Bangalore-560013

QP – 061

22

III Semester B.C.A./B.Sc. (FAD/IDD) Examination, March/April 2022
(Freshers + R) (2019 – 2020 and Onwards) (CBCS)
HINDI LANGUAGE
Paper – III : Natak, Sahityakaron Ka Parichay Aur Sankshepan

Time : 3 Hours Max. Marks : 70

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर **एक** शब्द या वाक्य में लिखिए । (10×1=10)

1) गुरूकुल में किसकी आज्ञा शिरोधार्य होती हैं ?
2) मालविका कहाँ की रहनेवाली है ?
3) सिकंदर किससे मैत्री करना चाहता है ?
4) युद्ध किसकी आजीविका हैं ?
5) चाणक्य का दूसरा नाम क्या है ?
6) प्रणय को कौन पहचानता हैं ?
7) यवन क्या करना जानते हैं ?
8) देवबल के विचार के विरोध में कौन खड़ा हुआ ?
9) चन्द्रगुप्त नाटक के लेखक कौन थे ?
10) किसके भाले भारतीय हाथियों के लिए वज्र हैं ?

St Claret College LIBRARY Bangalore-560013

II. किन्हीं **दो** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए । (2×7=14)

1) ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है और न किसी के अन्न से पलता है, स्वराज्य में विचरता हैं और अमृत होकर जीता है ।
2) यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि–भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है ? कदापि नहीं ।
3) राज्य किसी का नहीं हैं, सुशासन का हैं । जन्मभूमि के भक्तों में आज जागरण हैं, देखते नहीं, प्राच्य में सूर्योदय हुआ है ।

III. 'चन्द्रगुप्त' नाटक का सारांश लिखते हुए, विशेषताएँ लिखिए । (1×16=16)

अथवा

'चन्द्रगुप्त' नाटक के आधार पर शकटार का चरित्र–चित्रण कीजिए ।

P.T.O.

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए । (2×5=10)

1) पर्वतेश्वर

2) आम्भीक

3) कल्याणी

V. किसी **एक** साहित्यकार का परिचय दीजिए । (1×10=10)

1) प्रेमचन्द

2) मलिक मोहम्मद जायसी

VI. उचित शीर्षक देते हुए **एक तिहाई** शब्दों में संक्षेपण कीजिए । (1×10=10)

मृत्यु की समस्या मानव अस्तित्व और मानव खोज की सबसे प्रमुख समस्या है । जीवन-ज्ञान, संघर्ष और फैण्टेसी, इन सबके मूल में मृत्यु की भावना और मृत्यु का खौफ काम करता है । मानव अस्तित्व की सीमारेखा इसी ने स्थापित की है । ज्ञान की निरर्थकता, आनन्द और रस की एकरसता, मानव सम्बन्धों का अप्रत्यक्ष उपहास और अस्तित्व के प्रति गहरा अविश्वास, इन सबके भीतर मृत्यु का खौफ काम करता रहा है । जीवन और जीवन के मूल्यों के रूप में किसी अंतिम वस्तु को इस सीमा के ऊपर स्थापित करने और उपलब्ध करने की व्याकुलता ही चिन्तन प्रक्रिया को जन्म देती रही है क्योंकि मृत्यु एक भयंकर अर्थहीनता को जन्म देती है । सम्पूर्ण मानव चिन्तन और मानव अस्तित्व की निरर्थकता को संकेतित करती है । अत: मृत्यु मानव चिन्तन का मुख्य विषय है ।